शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जून 2013

घनानंद का संयोग निरूपण

डॉ.शिव कुमार व्यास
सहायक प्राध्यापक हिंदी
गो.से. अर्थवाणिज्य महाविद्यालय,
जबलपुर, मध्यप्रदेश

शोध संक्षेप

प्रेमानुभूति की उद्भावना सहृदय की एक प्रमुख विशेषता कही जाना अन्यथा नहीं होगा । कोमल हृदय में अथाह कामनाएँ उत्पन्न होती है । जिनमें सामने उपस्थित रूप लावण्य के प्रति आकर्षण की भावना भी एक है । यह रूप और लावण्य का आकर्षण जड़ और चेतन दोनों ही के प्रति हो सकता है । प्रकृति की अनमोल कृति नारी के प्रति पुरूष का स्वाभाविक आकर्षण होने पर जो अनुभूति की अविरल धारा बहती है, उसमें प्रेम की मिठास एक प्रमुख गुण है । प्रस्तुत शोध पत्र में रीतिकालीन कवि घनानंद के संयोग चित्रण को रेखांकित किया गया है।

प्रस्तावना

'प्रेम' बरबस अपने प्रिय के गुण कथन और रूप दर्शन का अभिलाषी हुआ करता है । जहाँ तक प्रेम की बात हो रही है तो यही एक भाव भी है जो रस राज श्रृंगार का प्राण तत्व है । मनुष्य के जीवन में हृदय के आँगन में कभी संयोग की सावन भादों की रिमझिम घटा बरसती है तो कभी वियोग के नवतपा और लू का झंझावात् उठता है । प्रेमी हृदय प्रेम के मार्ग का अडिग पथिक बन अपने हक में मिले काँटो और फूलों को सहेजता चलता है । प्रेमी की बांह में बांह होती है, तो गाता जाता है, और प्रियतम खो गया तो रोता जाता है , इसी वैषम्य के कारण ही आचार्य शुक्ल ने कहा कि -"श्रृंगार ही एक रस है जिसकी अभिव्यक्ति हंसकर भी होती है और रोकर भी ।"

स्पष्टतया यदि संयोग को प्रकाशित करें तो नायक और नायिका का पारस्पारिक रूप दर्शन स्पर्श और आलिंगन ही संयोग कहा जा सकता है । प्रिय के समक्ष और स्पर्श योग्य निकट होने पर हृदयगत भावनाएँ और अन्य व्यापार पुष्ट हो पड़ते है, और फिर संपूर्ण जगत अतिसुंदर प्रिय और अनुकूल जान पड़ता है । उस समय सभी कुछ अत्यंत रमणीय दिखाई देता है । हिंदी साहित्य के विविध कालों में श्रृंगार का और उसमें संयोग का प्रकाशन और वर्णन होता आया है, यहां पर कवि घनानंद के पूर्ववर्ती और समकालीन काव्य पर एक विंहगम दृष्टि डालना अनुचित न होगा ।

जयदेव के गीत गोविन्द के पश्चात विद्यापति ने हिंदी साहित्य में श्रृंगार वर्णन की परंपरा को आगे बढ़ाया। उन्होंने अपने संयोग श्रृंगार निरूपण में राधा कृष्ण के विलासमय रूप का चित्रण किया है, उनकी दृष्टि केवल उनके बाहरी हाव भाव एवं अंग -प्रत्यंग की शोभा पर ही अधिक टिकी है, परिणाम स्वरूप अनेक स्थलों पर इसमें अश्लीलता का समावेश हो गया है यथा -

"पीन पयोधर दूबरि गता,

मेरा उपजत कनकलता ।
ए कान्ह ए कान्ह तोरि दोहाई,
अति अपूरब देखलि साई ।।"1

सूर आदि अष्टछाप के कवियों ने राधाकृष्ण विषयक रति की अंकुर स्वरूपणी प्रारंभिक आकर्षणमयी आकांक्षा को प्रस्तुत करने का उद्योग किया है -

"गये स्याम रवि तनया के तट
अंग लसति चंदन की खोरी
औंचक ही देखी तहँ राधा
नैन विशाल भाल दिये रोरी ।।"2

जायसी आदि प्रेम मार्गी कवियों ने संयोग का प्रतिपादन अपने प्रेम कथा के पात्रों के माध्यम से किया है तो तुलसी ने अत्यंत मर्यादित ढंग से संयोग श्रृंगार का वर्णन किया है -

"कंकन किंकिनि नूपुर पुनि सुनि ।
कहत लखन सन राम हृदय गुनि ।।
मांनहु मदन दुंदुभी दीन्हीं
मनसा विश्व विजय कहं कीन्हीं ।।
अस कहि फिरि चितए तेहि ओरा,
प्रिय मुख ससि भए नयन चकोरा ।।"3

जहाँ भक्तिकाल में श्रृंगार भावना की भक्ति मंडित भव्यता थी वहां रीतिकाल में वासनात्मक लौकिकता की झलक स्पष्ट होकर सामने आई । संयोग का विकृत और ऐन्द्रिय लिप्सा से बेढब श्रृंगार किया गया । नख-शिख वर्णन में अलंकारिता के बाहुल्य से अनुभूति स्वयं पथरा गई और प्रेम जो वास्तव में हृदय की तरलता और सरलता में उपजता है वासनाजन्य श्रृंगार के मरूस्थल की रेत में जा मिला हृदय सूखकर सीपी और घोंघे हो गये । मतिराम की निम्नांकित पंक्तियाँ इसका स्पष्ट प्रमाण है -

"केलि के राति अघाने नहीं
दिन ही में लला पुनि घात लगाई
प्यास लगी कोउ पानी दें जाइयों
भीतर बैठि के बात सुनाई ।।"4

इसी प्रकार बिहारी की निम्न पंक्तियाँ द्रष्टव्य है -

"ज्यौं - ज्यौं जोवन जेठ दिन,
कुच मिति अति अधिकाति ।
त्यों - त्यों छिन -छिन कटि छपा,
छीन परति सी जाति ।।"5

इसी प्रकार -

"बिहँसति सकुचति सी दिये,
कुच आँचर बिच बाँह ।
भीजे पट - तट कों चली
न्हाय सरोवर माँह ।।"6

घनानंद का संयोग निरूपण अश्लील चित्रावलियों की नुमाईश के सूखे पनघट पर अनुभूति के औंधे पेड़ सूखे घड़ों को प्रेम की रसदार प्रवाहिनी तक पहुँचाने के लिए, सूख चुके हृदयों में भावों की हरीतिमा उपजानें के लिए भागीरथ स्वरूप कविवर घनानंद का आविर्भाव हुआ । उन्होंने परंपरागत संकीर्णता, अष्लीलता एवं वासना से रहित नवीन भाव भूमि पर संयोग का प्रतिपादन किया । डा. मनोहर लाल गौड़ के शब्दों में -

"जो प्रेम वासना मूलक है उसका पर्यावसान भोग में होता है पर जो विशुद्ध आत्मानुभूति के रूप में है उसका पर्यावसान प्रेम में होता है । ऐसा प्रेम किसी वस्तु जैसे भोग्यादि का साधन नहीं बनता । इस साध्यभूत प्रेम का मिलन संयोग कहा जाना चाहिए । घनानंद जी ने अनुभूत्यात्मक प्रेम के प्रसंग से संयोग वर्णन किया है ।"7

घनानंद के संपूर्ण काव्य में संयोग पक्ष बहुत कम

मात्रा में वर्णित हुआ है , जिसका स्पष्ट कारण यही है कि इसका अवसर उन्हें अपने जीवन में कम ही प्राप्त हुआ । उस अल्पकालीन प्रिय संयोग की मादक स्मृतियों की अभिव्यंजना घनानंद के संयोग श्रृंगार में स्पष्टतया परिलक्षित होती है । उनके संयोग विषयक पद अत्यधिक भंगिमा पूर्ण रस युक्त और आकर्षक बन पड़े हैं, क्योंकि उन्होंने अपने प्रियतम के तरल, सरल, विरल सौन्दर्य और रूप गुणों का ही वर्णन किया है । यथा -

"झलकै अति सुन्दर आनन गौर,
छके दृग राजति काननि छवै ।
हँसि बोलन में छवि फूलन की बरसा
उर ऊपर जाति ह्वै ।
लट लोल कपोल कलोल करैं
कल कंठ बनी जलजावलि द्वै ।
अंग - अंग तरंग उठे दुति की
परिहै मनौ रूप अबैधर च्वै ।।"8

यह रूप अनुभूत्यात्मक है, अतः इसमें अपनी अलग मादकता और प्रभावशीलता है । यहाँ पर प्रिय की भाव भंगिमाओं का सुंदर चित्र पुरातनता से हटकर प्रस्तुत किया गया है, जिसमें मद में छके कर्णाविलंबित नेत्रों और प्रिय के हँसने की माधुरता का मोती के समान तरल कांतिमय कोमल रूप का वर्णन मात्र अनुभूति से ही संभव है ।

लाल से भरी चितवन और प्रेम रस से सराबोर बातचीत के साथ मुसकान मुक्त मुहा को लिए अपने प्रियतम के प्रति मोह व्यक्त करता कवि का भाव देखिए -

"लाजनि लपेटि चितवनि भेद -भाय भरी,
लसित ललित लोल चख तिरछनि मैं ।
छवि को सदन गोरो भाल बदन रूचिर
रस निचुरत मीठी मृदु मुसक्यानि मैं ।।9

घनानंद की दृष्टि नायिका या प्रियतम के अत्यंत निकट या यों कहें कि बाँहों में रहने पर भी उसके अंग-प्रत्यंगों की स्थूल सुंदरता में नहीं रमती अपितु प्रेयसी के सामूहिक रूप लावण्य पर छितर सी जाती है, और उमंग उल्लास से भरे मन का चित्र उभर उठता है । जो अत्यंत हृदय ग्राही बनकर प्रेम की सूक्ष्मता के दर्शनकराता है । घनानंद के संयोग वर्णन के प्राप्त चित्रों में अधिकांष सुजान के रूप वर्णन से ही संबंधित हैं सुजान के नृत्य की चपलता उसके सम्मोहक कारे कजरारें नेत्रों की प्रभावोत्पादकता और प्रेम के अभिनय ने घनानंद को सुध बुध खोने और आत्म विस्मृत होने पर मजबूर कर दिया था, एक संयोग चित्र दृष्टव्य है -

"रूप मनवारी घनआनंद सुजान प्यारी,
घूमरे कटाछि, घूम करै कौन पै घिरै ।
नाच की चटक लसै अंगति मटक रंग,
लाडिली लटक संग लोचन लगै फिरै ।।10

घनानंद के काव्य में संयोग वर्णन के अंतर्गत विलास की प्रधानता होते हुए भी भावानुभूति की षिथिलता नहीं है । इसलिए यह वर्णन अष्लीलता की श्रेणी में आने से बच गया है । उनके काव्य में माँसलता का स्थान मानसिकता लेती जान पड़ती है । प्रियतम के रूप सौंदर्य की छटा कवि को बिकने के लिए मजबूर करती दिखायी देती है । 'रीझ' जिसका मूर्त रूप नहीं है , उसका रूप के साथ समन्वय करके घनानंद ने अपने काव्य को परंपरागत श्रृंगार वर्णन से अलग रख दिया है - प्रियतम का रूप उन्हें प्रति क्षण नवीन लगता है -

"रावरे रूप की रीति अनूप,

नयो नयो लागत ज्यौं -ज्यौं निहारिये ।
त्यौं इन आँखिन बानि अनोखी
अघानि कहूँ नहिं आनि तिहारियै ।।"11

घनानंद रीतिबद्धता के नखषिख वर्णन के कीचड़ में कमल की भाँति रहे । प्रियतम के दर्शन या साक्षात्कार की ही आवश्यकता महसूस हुई उन्हें प्रियतम का सामना हुआ और भाव विभोर होकर जड़वत हो गये, हांेठो पर ताला सा लग गया चकित भ्रमित नेत्र देखते ही रहे -

"चटक पे रसीले सुजान
दई बहुतै दिन नेकु दिखाई ।
कौंध में चैंध भरे चख हाथ ।
कहा कहौं हेरति ऐसे हिराई ।।"12

संयोग को प्राप्त कर संभोग का क्षणिक सुख भी घनानंद को प्राप्त हुआ जो उनके द्वारा विरचित पदों में अत्यंत अल्प मात्रा में उपलब्ध होता है । संयोग श्रृंगार भी संयोग का एक भेद ही है । जहाँ एक ओर कवि ने दर्षन, रीझ, मति डोलना, बिक जाना, तथा रूप की प्रषंसा करके संयोग श्रृंगार का प्रतिपादन किया है वहीं संभोग श्रृंगार के मादक किंतु अनुभूति जन्य भावों को भी समेटा है ।

पूर्व संयोग की दशा में जहां वह दीन होकर गुलाम बनकर पूरे मान से 'सुजान' प्रियतम के पैरों में माथा रगड़कर यह याचना कर बैठता है कि उसे प्रियतम का शारीरिक सामीप्य मिले वहाँ शारीरिक तृष्णा के अतिरिक्त अपने प्रियतम के प्रति उसका मानसिक आत्म समर्पण भी दिखायी देता है । सुजान के पैरों पर गिरकर संसर्ग की याचना करने का भाव उनके 'सूधै मारग' में कोई बदचलनी नहीं लज्जा नहीं लाता । उनकी दृष्टि तो सुजान के षरीर से टपकती रूप लावण्य की राशि में विभोर होकर मतवाली होने को बैचेन लगती है । घनानंद के संभोग श्रृंगार के विषय में डा. द्वारिका प्रसाद सक्सेना का निम्न कथन अवलोकनीय है -

"घनानंद की प्रेमानुभूति में श्रृंगार के संयोग या संभोग का हर्ष, उल्लास एवं सुख भी भरा हुआ है। यद्यपि घनानंद ने थोड़े से छंदों में ही प्रेम श्रृंगार के संयोग पक्ष का निरूपण किया है, जिसमें संभोग सुख की उमंग, मिलन का उल्लास, आनंद क्रीड़ा की आतुरता, रति सुख का उत्साह, सामीप्य लाभ का हर्ष तथा संसर्ग की लालसा का उद्दाम वेग भरा हुआ है । घनानंद ने इसीलिए संयोग सुख के आनंद से प्रफुल्लित रोम-रोम तथा अंग-अंग से फूटते हुए हर्षोल्लास का सजीव चित्रण किया है ।"13

प्रियतम से संयोग की घड़ी निकट पाकर मानों उमंगे हृदय निकलकर आनंद रस में भीगकर रोम - रोम में व्याप्त हो गई हैं यथा -

"ललित उमंग बेली आलबाल अंतर ते,
आनंद के घन सींची रोम-रोम हैं चढ़ी ।।"14

घनानंद के द्वारा जिन विविधण् चेष्टाओं एवं भंगिमाओं का चित्रण किया गया है । वह उनकी सूक्ष्म निरीक्षण करने वाली दृष्टि का परिचय देता है । घनानंद ने काम चेष्टाओं के वैविध्य की सांगोपांग विविधता में न उलझकर चंद मुद्राओं को विवेचित करके भावों की अभिव्यक्ति की है । सुजान के यौवन पूर्ण और संभोग पूर्व चित्र की छटा देखिए -

"सुख स्वेछकनी मुखचंदवती,
विपुरी अलकावि भांति भली
मद जोबन रूप छकी अंखियाँ
अवलोकति आरस रंग रली ।।"15

संभोग वर्णन में शुद्ध रति क्रीड़ा का चित्रण घनानंद ने किया है, किंतु काव्य कला और अनुभूत्यात्मक प्रेम के पुट के कारण वह प्रदर्शन मात्र ही नहीं रहने पायी है । मांसलता के होते हुए भी भाव इनका दामन कभी नहीं त्यागते । दोनों प्रेमी आज तक दूसरे के नजदीक हैं, कहाँ प्रेमी 'सांझ ते भोर लो और मोर ते साझ लो, प्रियतम की राह देखा करता था वही आज उससे आलिंगन बद्ध हो आत्म समर्पण के लिए तैयार है -

"पौंढ़े घनआनंद सुजान प्यारी परजंक धरे धन अंक तठ मन रंग गति है । भूषन उतारि अंग अंगहि सम्हारि ताना रूचि के विचार सों समोय सीझी मति है ।।"16

इन चित्रणों में कहीं भी कवि का मन अष्लीलता और नग्नता का प्रदर्षन लिए प्रस्तुत नहीं होता बल्कि उनके अंतर के भावों और कामनाओं के सजीव जीवंत चित्र प्रतिबिंबित करती हुई उल्लास की व्यंजना है ।

घनानंद में प्रयत्न साध्य पांडित्य प्रदर्शन और आश्रय दाताओं के मनोरंजन की भावना नहीं रही । प्रेम की मस्ती और पीड़ा को स्वयं कवि ने अनुभव किया, प्रियतम को जान से बढ़कर चाहा इसलिए इनके चित्रण में वासना की दुर्गंध नहीं मिलती । 'काम' या 'संभोग' स्वस्थ जीवन की नैसर्गिक आवश्यकता मानकर ही उसके यथार्थ रूप को चित्रित किया गया है । घनानंद के लोकप्रिय अध्येता राम वशिष्ठ जी ने भी लिखा है कि "रीतिकालीन कवियों के संयोग श्रृंगार में दूती और सखियों द्वारा प्रेमी और प्रेमिकाओं के मिलन का प्रयत्न चलता रहता था किंतु घनानंद के काव्य में प्रेम एक आंतरिक भावना है । इसमें किसी प्रकार की चतुरता दिखाने की आवश्यकता नहीं और न ही किसी प्रकार की वक्रता की ही आवष्यकता है। यह तो आत्मा की पुकार है और यदि शारीरिक मिलन नहीं होता तो उसकी तनिक भी चिंता नहीं ।"17

निष्कर्ष

घनानंद ने यद्यपि अपने काव्य जीवन में संयोग वर्णन अति अल्प किया है, किंतु उतने अध्ययन से ही उसकी गहराई और व्याप्ति का सहज ही आभास मिल जाता है । प्रियतम सुजान के रूप लावण्य पर मुग्ध घनानंद अपनी प्रेम साधना में इतने अनुमुग्ध रहे कि अपने प्रेम के सूधे मारग की हर चाल का खुलासा करते चले गये । भावनाओं, अनुभूतियों और प्रेम रस पगी भावभूमि के कारण उनका घोर श्रृंगारिक चित्रण भी भावात्मक और चित्रात्मक हो गया है ।

संदर्भ :

1. हरीश हिंदी दिग्दर्शन - हरीश प्रकाशन मंदिर आगरा, पृ 23
2. घनानंद दान बहादुर सिंह, पृ 105
3. तुलसीदास - राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी, पृ. 178
4. मतिरामः कवि और आचार्य, डा. महेन्द्र कुमार, पृ. 73
5. डा. बच्चन सिंह - बिहारी का नया मूल्यांकन, पृ. 34
6. वही, पृ. 37, प्रकाशक - हिंदी प्रचारक संस्थान, वाराणसी, कलकत्ता, लखनऊ
7. घनानंद का रचना संसार - शशि सहगल, पृ. 104
8. घनानंद कवित्त - विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, पृ. 63
9. घनानंद कवित्त - विश्वनाथ प्रसाद मिश्र , पृ. 60
10. घनानंद - दान बहादुर पाठक, पृ. 105
11. घनानंद कवित्त, पृ. 104
12. घनानंद का रचना संसार - शशि सहगहल, पृ. 108
13. हिंदी के प्राचीन प्रतिनिधि कवि - डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना, पृ. 101

14. घनानंद - दान बहादुर पाठक, पृ. 109
15. घनानंद का रचना संसार - शशि सहगल, पृ. 112
16. हरीश हिंदी दिग्दर्शन - गंगा सहाय प्रेमी, राजेश्वर चतुर्वेदी, पृ. 50
17. घनानंद - दान बहादुर पाठक, पृ. 108